© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 07 , Issue : 04 | October - December 2021

गुरुकुल झज्जर : एक अध्ययन

राजेश कुमार, प्रवक्ता, द्रोणाचार्य गर्वनमेंट कॉलेज, गुरूग्राम

शोध–आलेख सार

इस आलेख के माध्यम से शोधार्थी द्वारा गुरूकुल झज्जर के बारे में प्रकाश डाला गया है। लेखक ने गुरूकुल की स्थापना से अब तक का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। गुरूकुल की शिक्षा पद्धति व संग्रहालय का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

मुख्य शब्द : शिक्षा पद्धति, संग्रहालय, ग्रंथ, वेद, तपःस्थली, गीता, कुरूक्षेत्र।

भूमिका

हरियाणा भारत का छोटा, किन्तु समृद्ध प्रदेश है। यहा $27^0.39'$ से $30^0.55'$ उत्तर अक्षांश और $74^0.28'$ से $77^0.36'$ रेखांश के मध्य स्थित है। इसके उत्तर में पंजाब और हिमाचल प्रदेश के कुछ भाग पड़ते है और पूर्व में यमुना नदी इसकी पूर्वी सीमा निर्धारित करती है इसके पश्चिम में पंजाब और राजस्थान के प्रदेश है और दक्षिण में उत्तर प्रदेश का कुछ भाग और राजस्थान का इलाका है। प्रदेश का क्षेत्रफल 44,212 वर्ग किलोमीटर है।[1]

हरियाणा अति प्राचीन काल से ही कर्म और अध्यात्म की भूमि रहा है इन दोनों का समन्वय इस धरती की सबसे बड़ी विशेषता है। वैदिककाल और उसके उपरान्त सहस्राब्दियों तक यह ऋषि–मुनियों की तपःस्थली वैदिक ऋचाओं से गुंजायमान और अध्यात्म–सुधा से अनुप्राणित रही है। इसी कारण मनु ने इसको 'ब्रह्मर्षि देश' की संज्ञा दी है। कालान्तर में यहाँ कर्म ने यहाँ अपना प्रखर रुप दिखाया। तब इसे 'कुरुक्षेत्र' की गरिमा और कुरुजांगल का नाम मिला मोहमाया के जाल में फंसे अर्जुन ने गीता का उपदेश भी योगिराज श्रीकृष्ण ने इसी भूमि पर दिया। समय और आगे बढ़ा, तब इतिहास – प्रसिद्ध वीर यौधेयों ने इसको अपनी कर्मभूमि बनाया तब इसको 'बहुधान्यक' और 'यौधेय देश' के नाम से जाना गया।[2]

5वीं शती ई० पूर्व से 4वीं शती ई० तक का यह वह समय था जब भारतीय इतिहास को बहुत कुछ मिला। विस्वविजय का मनोरथ लेकर पश्चिम से पूर्व की और बढ़ते हुए सिकन्दर के सपने भी इसी भूमि पर चकनाचूर हुये। कुषाणों का विस्तृत साम्राज्य भी इसी भूमि के वीर सपूत यौधेयों के पैरों तले रौदा गया। महमूद गजनवी को भी यहीं लूटा गया। 1857 के स्वातन्त्र्य संग्राम की ज्वाला भी यहीं से भड़की और उसके बाद यहाँ के वीर राव कृष्ण गोपाल, बल्लभगढ़ नरेश नाहरसिंह और नवाब झज्जर ने हंसते–हंसते मातृभूमि के लिए प्राण त्याग दिए इस धरती ने हजारों ऐसे वीर पैदा किये जिन्होंने प्राणों तक की परवाह न कर, राष्ट्र की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया।[3]

भूमि में डाला गया एक नन्हा सा बीज ही विशाल वटवृक्ष बनकर पथिकों को छाया देता है, पक्षियों को विश्राम देता है ऐसे ही द्विजों की एक विश्राम देता है ऐसे ही द्विजों की एक विश्राम स्थली है – महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर। इसकी एक विशेषता है कि इस शिक्षा संस्था में आर्ष पाठविधि ही पढ़ाई जाती है। इसका अर्थ है अनार्ष ग्रंथों का सर्वथा बहिष्कार। दण्डी विरजानन्द ने स्वामी दयानन्द से यही तो कहा था 'मुझसे विद्या पढ़ने से पहले लघुकौमुदी, सारस्वत आदि ग्रंथों को यमुना में डूबोदो। आज्ञाकारी शिष्य ने वैसा ही किया। तभी वह स्वल्पकाल में ही आर्ष पद्धति से वेद एवं व्याकरण का पण्डित बनकर शास्त्रीय शब्द जाल मात्र में फंसे अनेक पण्डितों को शास्त्रार्थ में पराजित कर सका। तभी तो वह वेद के रहस्य को हृदयङ्गम करके अपना मस्तक ऊँचा करके घोषणा कर सका – वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। यदि ऋषि दयानन्द भी अन्य पण्डितों की भांति के मिथ्या शब्द जाल में फंस जाते तो वे भी वहीं होते जो कि अन्य विद्वान् एवं पण्डित थे। तब आर्ष ज्ञान की ज्योति न जल पाती। वेद के रहस्य का उद्घाटन न हो पाता। सत्यार्थ का प्रकाश हम तक न पहुँच पाता। महर्षि दयानन्द के पास सब से टक्कर लेने के लिए केवल एक ही साधन था और वह था आर्षज्ञान। इसके बल पर ही उस वेदवेता संन्यासी ने अज्ञानान्धकार को छिन्न भिन्न कर डाला। आपने योग्य शिष्य दयानन्द के हाथ में थमा दिया। नेत्रहीन, कृशकाय तथा वृद्ध होने के कारण आप उस आर्ष ज्योति का सर्वत्र घूम–घूमकर प्रचार नहीं कर सके, किन्तु दयानन्द के हाथ में आते ही उस छोटी सी किन्तु सुदृढ़ ज्योति ने एक विशाल मशाल का रूप ले लिया। अन्धकार छिन्न–भिन्न हो गया। लोगों के ज्ञानयक्षु खुल गये। तमस् का पर्दा हट गया। वे आर्ष–अनार्ष में विवेक करने लगे। सर्वथा उपेक्षित, तिरस्कृत तथा लुप्त प्रायः हुये वेदों का पुनः जयघोष होने लगा।

दण्डी विरजानन्द! स्वामी दयानन्द! आपकी इसी आर्ष ज्योति का अनुगामी, प्रचारक है यह गुरुकुल झज्जर। जिस गुरु परम्परा से यह ज्योति यहाँ पर प्रज्वलित की गयी गुरुकुल झज्जर तुम्हारी उसी आर्ष ज्ञान ज्योति का संवाहक है, रक्षक है। इसके साथ ही इस गुरुकुल के नियम, व्यवस्था, दिनचर्या सब आपने ढ़ंग से निराले है 21वीं सदी के इस भौतिक युग में यह सुनकर किसे आश्चर्य नहीं होगा कि जहाँ आज के तथाकथित स्कूल–कॉलेज का विद्यार्थी अपनी वेशभूषा, श्रृंगार पर अनापशनाप खर्च करता है, वहाँ गुरुकुल झज्जर में कमर में दो गज का वस्त्र लपेटे, मूंज मेरवलाधारी ब्रह्मचारी का व्यय कितना कम होता होगा, आप अनुमान तो कीजिए। सर्दी–गर्मी– बरसात में वह कंकरीली पथरीली भूमि पर सर्वत्र नंगे पैर विचरण करता है रात्री में शयन के लिए उसके पास न पलंग है, न चारपाई, न गद्दा, न तकिया। भूमि को माता मानने वाला वह ब्रह्मचारी खुली भूमि पर एक पतली सी चादर डालकर उसी प्रकार सुख की नींद सो लेता है जिस प्रकार नन्हा शिशु माता की गोद में ऐसा करके जहाँ वह

एक और अपने शरीर को इच्छानुसार साध लेता है वह प्राचीन ऋषियों के तपस्वी जीवन की याद भी दिला देता है।

आज वटवृक्ष की भांति विस्तार को धारण करने वाले इस गुरुकुल झज्जर की स्थापना का संकल्प करने वाले थे स्वनाम धन्य पण्डित विश्वंभर जी। झज्जर में ही जन्में पण्डित जी स्कूली शिक्षा के बाद विभिन्न नौकरियों को करते हुए नैरोबी, युगाण्डा आदि देशों में भ्रमण करके पुनः भारत आकर सेना में भर्ती हो गए थे। सेना से आकर आप गुरुकुल कांगड़ी में महात्मा मुंशीराम जी के पास जाकर रहे कांगड़ी में रहते हुए ही पण्डित जी की प्रबल इच्छा हुई की झज्जर में भी एक गुरुकुल स्थापित किया जाना चाहिए झज्जर में गुरुकुल की स्थापना भी सरल नहीं थी क्योंकि जहाँ पण्डित जी को इस कार्य में अनेक सहयोगी मिले वहाँ बाधा डालने वालों की भी कोई कमी नहीं थी और इनमें अग्रणी थे – झज्जर निवासी पण्डित दीनदयालु व्याख्यानवाचस्पति। ये सनातन धर्म सभा के प्रधान थे। इन दिनों आर्य समाज का प्रचार–प्रसार सर्वत्र हो रहा था जिस कारण मूर्ति पूजा तथा पुराण आदि ग्रन्थों पर श्रद्धा रखने वाले अनेक व्यक्ति आर्य समाज का विरोध भी करते थे। कहीं–कहीं तो आर्य समाजी बनने पर उस व्यक्ति का सामाजिक बहिष्कार भी कर दिया जाता था। आर्य समाज के कार्यों में तरह–तरह की बाधाएँ सनातन धर्मियों द्वारा उत्पन्न की जाती थी अन्य कारणों के साथ इसका एक कारण यह भी था कि आर्य समाज के बढ़ते प्रचार से पौराणिकों की पोल खुल जाती थी जिससे उनकी आजीविका पर भी प्रभाव पड़ता था। अतः वे इसकी अच्छी बातों का केवल विरोध ही नहीं करते थे अपितु इन्होंने चुनौती भरे शब्दों में पं० विश्वम्भर जी को ललकारा था यदि झज्जर से गुरुकुल की स्थापना हो गई तो मैं अपनी एक और की मूंछें मुंडवा लूंगा। विश्वम्भर जी ने उद्विग्नता रहित शान्त मन से उनकी चुनौती का उत्तर दिया कि आर्य पुरुष एक बार संकल्प करके पीछे नहीं हटता। मेरा संकल्प भी झज्जर में गुरुकुल खोलने का है तथा वह पूर्ण होकर ही रहेगा।

पं० विश्वम्भर जी भी साहस के धनी थे। उन्होंने अपना उद्योग चालू रखा। विधि का नियम है कि परोपकार के कार्य में विघ्न तो अवश्य आते हैं किन्तु यदि पूर्ण श्रद्धा के साथ व्यक्ति अपने लक्ष्य की और बढ़ता रहे तो न केवल विघ्न बाधाएं दूर हो जाती है अपितु उस कार्य में सहायक भी प्राप्त हो जाते हैं। ऐसा ही पं० विश्वंभर जी के साथ भी हुआ। गुरुकुल खोलने के पवित्र उद्देश्य की पूर्ति में पण्डित जी को भी उनके विद्यार्थी जीवन के सहपाठी लाला नन्दलाल तथा आर्य समाज झज्जर के मन्त्री लाला रामचन्द्र जी मिल गये। नन्दलाल जी उन दिनों रेलवे गार्ड थे। तीनों मित्रों ने झज्जर की स्थापना को अपना लक्ष्य बना लिया।

पं० विश्वम्भर जी इस तथ्य से परिचित थे कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब हरियाणा में किसी उपयुक्त स्थान पर ही गुरुकुल की स्थापना करना चाहती है पण्डित जी ने अपने सहयोगी लाला

नन्दलाल जी से विचार विमर्श किया कि नन्दलाल जी की भूमि जो कि झज्जर से दक्षिण में 3 किलोमीटर दूरी पर है, क्यों न वहीं पर गुरुकुल की स्थापना की जाए। यद्यपि नन्दलाल जी इस कार्य के लिए भूमि को बिना मूल्य लिए ही देने को तैयार थे किन्तु उनका भाई गंगावल्लभ बिना मूल्य भूमि नहीं देगा, ऐसा वे जानते थे। यह विचार उन्होंने पण्डित जी के सामने प्रस्तुत करते हुए कहा कि श्री बद्रीदास रईस के प्रभाव से गंगावल्लभ उचित मूल्य देकर भूमि प्रदान कर सकता है। पण्डित जी बोले कि इस विषय में मैं बद्रीदास जी से बातचीत करूंगा क्योंकि उनसे मेरे अच्छे सम्बन्ध है। विचार विमर्श चलता रहा तथा अन्ततोगत्वा लाला बद्रीदास जी ने गंगावल्लभ के पिता रामजीदास को 'एक सहसा रूपया लेकर इक्कीस बीघा तीन विस्वा भूमि' गुरुकुल हेतु देने के लिए प्रसन्न कर लिया।

इस प्रकार भूमि की समस्या का समाधान होने पर इस और से निश्चिन्त होकर पण्डित विश्वम्भर जी ने सोचा कि कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व एक बार गुरुकुल कांगड़ी जाकर इस विषय में महात्मा मुंशीराम जी से परामर्श करना चाहिए। पण्डित जी की इच्छा थी कि उनके साथ नन्दलाल जी व रामचन्द्र भी चले इन दोनों महानुभावों की सहमति मिलने पर तीनों मित्र झज्जर से गुरुकुल कांगड़ी की यात्रा पर निकल पड़े। अभिवादन के उपरान्त पण्डित जी ने अपने दोनों मित्रों का परिचय महात्मा जी से कराया तथा अपने आने का अभिप्राय प्रकट किया उनके इस निश्चय को सुनकर मुंशीराम जी के हृदय में आनन्द की लहरें उठने लग गई। गुरुकुल खोलने के विषय में अपनी सहमति देकर कुलपति बोले कि गुरुकुल के लिए क्रय की गई भूमि का पंजीयन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नाम होने पर वहाँ गुरुकुल खोलना उपयुक्त रहेगा। जब यह कार्य सम्पन्न हो जाए तब आप मुझे सूचित कर दीजिए। तदनन्तर शिलान्यास का कार्य पूर्ण कर दिया जायेगा।

यह आदेश प्राप्त कर के तीनों मित्र झज्जर की और लौट चले तथा मार्ग में लच्छू सिंह जी अधिवक्ता के घर ठहर कर पंजीकरण का प्रारूप निश्चित करके झज्जर में आ गए। पंजीकरण के लिए पंजाब सभाको पत्र लिख दिया गया तथा सभा प्रधान लाला रामकिशन की साक्षी में भूमि का पंजीकरण फाल्गुन बदी दशमी सवत् 1971 विक्रमी (9 फरवरी, 1915) ईसवीं को कर दिया। तत्पश्चात् सभा के अपनी अन्तरंग सभा की प्रस्ताव संख्या 16 के अनुसार तीन ज्येष्ठ संवत् 1972 (16 मई, 1915) को गुरुकुल झज्जर की स्थापना की स्वीकृति दे दी।[4]

इस प्रकार गुरुकुल की स्थापना पण्डित विश्वम्भर जी ने 1915 में की। लेकिन पण्डित जी का स्वर्गवास होने के कारण गुरुकुल का कार्य रूक गया। मार्च 1924 को स्वामी ब्रह्मानन्द जी के परामर्श से स्वामी परमानन्द जी ने गुरुकुल को विधिपूर्वक चलाया।[5] गुरुकुल झज्जर ने जहाँ अन्य क्षेत्रों में राष्ट्र की सेवा की वहाँ इतिहास के क्षेत्र में भी अविस्मरणीय योगदान दिया।

निष्कर्ष

झज्जर गुरूकल का जहाँ तक एक मुख्योद्देश्य जनता में इतिहास के प्रति रूचि तथा प्रेम पैदा करना एवं इतिहास के महत्त्व को बताना है। वहाँ गुरुकुलीय छात्रों को क्रियात्मक रूप से इतिहास की शिक्षा देकर उन्हें इतिहास के उद्भट विद्वान बनाना तथा ऐतिहासिक खोज में रुचि पैदा करना भी है। भारतीय प्राचीन लिपियों जैसे ब्राह्मी, खरोष्ठी आदि का भी अभ्यास संग्रहालय में काम करने वाले विद्यार्थी करते हैं और इसमें उन्होंने अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली है।

संदर्भ सूची

1. डॉ० के०सी० यादव, हरियाणा का इतिहास आदि काल से 1966 तक, होप इंडिया पब्लिकेशन्स, गुरुग्राम, 2013, पृ० 11
2. आचार्य वेदव्रत शास्त्री, स्वामी ओमानन्द सरस्वती जीवन–चरित, हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर (हरियाणा), 22 मार्च 2011, पृ० 8
3. स्वामी ओमानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ, सम्पदाक स्नातक मंडल, गुरुकुल, झज्जर (हरियाणा), पृ० 1
4. डॉ० रघुवीर वेदालंकार, महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर का शतवर्षीय इतिहास, विरजानन्द देवकरणि प्रकाशक, विद्यार्थी सभा महाविद्यालय, गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर हरियाणा, पृ० 90
5. डॉ० जगदीश प्रसाद, प्राचीन भारतीय मृन्मूर्ति कला पुरातत्व संग्रहाल गुरुकुल के सन्दर्भ में, हरियाणा प्रान्तीय पुरातत्व संग्राहलय गुरुकुल झज्जर, हरियाणा, 2012, पृ० 6